पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

वैज्ञानिकों से जब भौतिकी अर्थात् (फिजिक्स) को लेकर प्रश्न किए जाते हैं तो उनका कहना होता है कि मानव शरीर इस भौतिक ब्रह्माण्ड को तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं को लेकर इसमें सक्षम नहीं है, या कहें कि संवेदनशील नहीं है, असक्षम है। सबकुछ इन्द्रियातीत ही है।

आपको एक उदाहरण से हम समझाने की कोशिश करते हैं... कि जैसे एक ठंडी धातु या मेटल जब हम छूते हैं तो हमें वो ठंडक नहीं, बल्कि उसकी तासीर, उसकी प्रकृति के आधार से गर्मी भी दे सकती है। जैसे बर्फ की तासीर ठंडी नहीं है, गरम है, इसलिए उससे सिकाई करते हैं। एक वस्तु जो एक व्यक्ति के लिए मीठी हो सकती है, वही दूसरे के लिए ज़हर भी हो सकती है। ठंडी धातु किसी को ठंडी लगती है तो किसी को गर्म लगती है। गर्मी में कोई ठंडा जल पीता, कोई नॉर्मल तो कोई गर्म भी पीता। कोई ठंड के मौसम में भी ठंडा या बर्फ का पानी पीता। आप सोचो ज़रा... कि क्या हम इन इंद्रियों से सही महसूस कर पा रहे हैं? कोई ये नहीं कह सकता कि यह वस्तु ऐसी ही है। यह आपका अनुभव है, लेकिन सही नहीं है।

इसके अलावा आप देखो, मनुष्य कितना सीमित व फँसा हुआ है। मनुष्य की सूंघने की शक्ति काफी सीमित, जबकि मक्खियों की असीमित है, जो एक मील दूर से अपने झुंड को पहचान लेती है। हमारी ध्वनि की स्थिति भी उतनी अच्छी नहीं है, जबकि कुत्ते की सुनने की शक्ति बिल्कुल भिन्न होती है। प्रकाश, जिसका प्रयोग हमारी आँखें अपने आस पास की दुनिया को देखने के लिए करती हैं, वह एक विशाल पर्दे की एक छोटी सी झिरी से हम तक पहुंचती है। आप सोचिये, हम कितने सीमित हैं! इसके बीच

इन्फ्रारेड है। जिसका प्रयोग रडार, रेडियो, टेलीविज़न के लिए किया जा रहा है। एक दृश्य स्पेक्ट्रम है, जिसका प्रयोग मनुष्य लम्बे समय से देखने के लिए कर रहा है। आप सोचो, जब हमारा देखना कम हो जाता है तो हम चश्मे या लेन्स का प्रयोग करते हैं। हम जब यहाँ से ना कुछ देख सकते हैं ना सीख सकते हैं, ना महसूस कर सकते हैं। ये इंद्रियाँ इतनी सीमित हैं कि उसे हम थोड़ा भी वास्तविक अनुभव करने में असक्षम हैं।

आप यह देखो कि वो परमात्मिक और आत्मिक शक्ति, इन सभी आयामों से बहुत ऊपर है, जिसे हमें अनुभव करने के लिए, इन पर्दों को हटाने के लिए ध्यान देना पड़ेगा। अरे, ये वो चीज़ है जिसे पूरी दुनिया ढूंढ़ रही है और हम उसका अनुभव कर रहे हैं। कुछ भी बुरा व अच्छा नहीं है। बस अटैचमैंट के कारण बुरा अच्छा लग रहा है। थोड़ा निकालना पड़ेगा खुद को इससे। बैठो, सोचो, समझो। जीवन के इन आयामों से आप सब कुछ घटा रहे हैं। इतना आसान नहीं, परमात्मा को समझना। सबकुछ इन्द्रियातीत होने में ही है। लेकिन सभी इन बन्धनों से दु:खी भी हैं और छोड़ना भी नहीं चाहते। एक अनुभव आपको और अपने में फँसा रहा है, आपको उठा नहीं रहा। अगर जीवन में सबकुछ इतना सरल है तो उसे सहज तरीके से हम अनुभव क्यों नहीं कर पा रहे हैं? बहुत सी गहराई है इन बातों में, क्योंकि एक अनुभव बार-बार वही अनुभव करवाने की बात करता है, जो दोबारा आपको होने वाला नहीं है। सोचो....

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-11 (2017-2018)

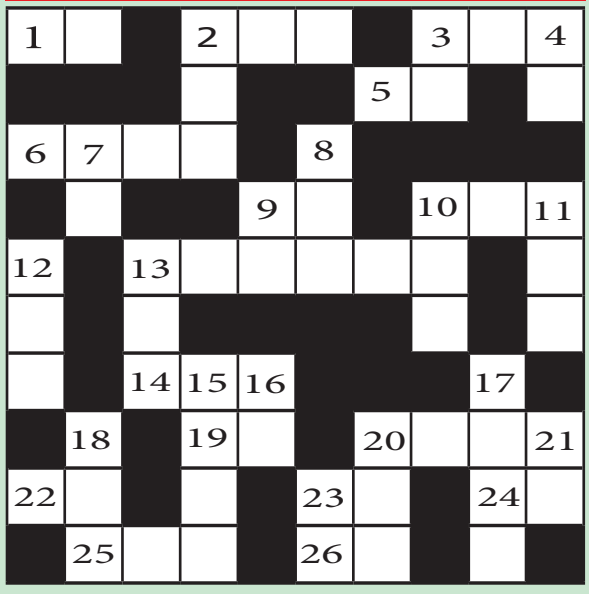

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. सबल, शक्तिशाली (3)
3. रात, रजनी, रात्रि (2)
4. पैर, चरण (2)
7. शिव, महेश, स्वयंभू (2)
8. सुबह, सवेरे (3)
9. खास भारत....सारी दुनिया का उद्धार स्वयं बाबा करते हैं, एक फल (2)
10. राई, विनाश काल में....मिसल मनुष्य पिस जायेंगे (3)
11. खत्म, पूरा, पूर्ण (3)
12. दुनिया के....के पहले अपना सब कुछ सफल करना है (3)
13. नाविक, पार लगाने वाला (3)
15. मेरी....की तस्वीर सजाने वाले, भाग्य (4)
16. पानी निकालने का कृत्रिम जलमार्ग (2)
17. श्रीमत पर अपनी चलन....है, ठीक करना (4)
18. विष्णुपुरी में चलने के लिए सच्चा-सच्चा....बनना है (3)
20. भक्त शिरोमणि, ब्रह्मा के पुत्र (3)
21. ईर्ष्या, आपस में रेस करनी है.... नहीं (2)
23. रोब, रुतबा (2)

बायें से दायें

1. ज्ञान के....चुगने वाले होली हंस बनो, एक रत्न (2)
2. सर्वगुण....16 कला सम्पूर्ण बनना है (3)
3. लेप-छेप रहित, आत्मा....नहीं है (3)
5. ओर, तरफ (2)
6. ....कर आँखों को सिविल ज़रूर बनाना है (4)
9. शोभा, कांति, चमक (2)
10. सदा ईश्वरीय....में लगे रहना है, सेवा (इंगलिश) (3)
13. श्रीमत पर सदा....बनना है (6)
14. प्रताड़ना, सजा देना (3)
19. अभी तुम बच्चों को 16.... सम्पूर्ण बनना है (2)
20. केवल नाम के, आजकल के ब्राह्मण केवल....ब्राह्मण हैं (4)
22. स्वर्ग का फर्स्ट प्रिन्स (2)
23. धार, तलवार, चाकू आदि का पैना किनारा (2)
24. चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ....गिरे तो चकनाचूर (2)
25. खज़ाना, भण्डार (3)
26. ऊँचाई-लम्बाई (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

ग्वालियर-म.प्र.। ग्वालियर जिला प्रशासन एवं म.प्र. जन अभियान परिषद् द्वारा आयोजित एकात्म यात्रा के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित व्यसन मुक्ति कार्यक्रमों के अंतर्गत् हज़ारों लोगों द्वारा भरे गए व्यसन मुक्ति संकल्प पत्र माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को भेंट करते हुए ज़ोन निदेशिका ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. आदर्श बहन तथा ब्र.कु. सुधा बहन।

अम्बाला कैंट-हरियाणा। शिव जयंती पर आयोजित 'शिव संदेश यात्रा' का शुभारंभ करने के पश्चात् ए.डी.जी.पी. आर.सी. मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन। साथ हैं जिला बार एसोसिएशन के प्रधान रोहित जैन, राज्य महिला आयोग की सदस्य नम्रता गौड़, सर्जन एम.एम. दत्ता, सीनियर एडवोकेट कमलेश गुप्ता तथा अन्य।

बांदा-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव संदेश यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष मोहन साहू। साथ हैं ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शालिनी तथा अन्य।

रटलाई-झालावाड़(राज.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. मीना, सिंधी समाज के जिलाध्यक्ष जितेन्द्र ममतानी, थाना प्रभारी रहमान जी, डॉ. ओम प्रकाश तथा अन्य।

भवानीमण्डी-राज.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए प्रमोद कुमार,कानूनगो साहब, पत्रकार दिलीप शर्मा, ब्र.कु. निशा तथा अन्य।

भादरा-राज.। बाबा श्री रामदेव जी मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में दीप प्रज्वलित करते हुए जसवन्त जी,पुलिस थाना भिरानी, ओम प्रकाश यादव, सरपंच गोविंद सिंह राठोड़, गोविंद राम शर्मा,पुजारी,श्री रामदेव मंदिर, ब्र.कु. बहन तथा अन्य।